नारनौल के स्मारक

शाह इब्राहीम का मकबरा

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण,
चण्डीगढ़ मण्डल, चण्डीगढ़
2011

नारनौल के स्मारक

महेन्द्रगढ़ का जिला मुख्यालय नारनौल (28° 02' पूर्व; 78° 05' उत्तर) दिल्ली से 135 कि.मी. दूर अजमेर-रेवाड़ी रेलवे मार्ग पर स्थित है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, महाभारत में नारनौल नगर 'नरराष्ट्र' के नाम से प्रसिद्ध था एवं हस्तिनापुर से चम्बलघाटी के मध्य इस नगर पर पाण्डवों के सबसे छोटे भाई सहदेव का शासन था। एक अन्य किंवदन्ती के अनुसार सघन वनों से आच्छादित इस क्षेत्र में कभी शेर विचरण करते थे। इस प्रकार नाहर-नौल (शेरों का भय) अथवा नाहर-नौल (शेरों का घर) और बाद में यह नारनौल बन गया। मान्यता अनुसार, इस नगर की नींव खोदते समय एक सांप एवं नेवला आपस में लड़ते हुए निकले थे जिसके कारण इसका नागनौल नाम पड़ा। एक अन्य कथानुसार, राजा नुन कर्ण ने अपनी पत्नी के नाम पर इस नगर का नाम नारनौल रखा था। इसे प्राचीन नन्दीग्राम से भी सम्बंधित किया जाता है। समय के साथ साथ इस नगर से अनेक किस्से-कहानी, विश्वास एवं मान्यताएं जुड़ीं। घोसी पहाड़ी की तलहटी में कुटिया बनाकर निवास करने वाले ऋग्वेद के प्रसिद्ध योगी 'च्यवन' से भी इस नगर को जाना जाता है। मध्यकाल में इस्लाम के आगमन तक नगर तथा इसके इर्द-गिर्द क्षेत्रों पर राठौर राजपूतों का शासन रहा जिनके बारे में जानकारी बहुत कम है। मुस्लिम योद्धा संत हजरत तुर्कमान जो कि शाह विलायत के नाम से भी जाने जाते थे, एक हाथ में रत्न तथा दूसरे में तलवार लेकर नारनौल आये थे जिन्होंने यहां के राजपूत राठौर राजाओं से अनेक युद्ध किये और ऐसे ही एक युद्ध में सन् 1137 में उनकी मृत्यु हो गयी। इनसे सम्बंधित एक मकबरा एवं मस्जिद जिसे बाद में मदरसा परिसर के साथ संलग्न किया गया, आज के नगर के बीचों बीच स्थित है। लोदी राजाओं के समय में शेरशाह सूरी के दादा इब्राहीम खान को फिरोज-ए-हिसार के प्रशासक ने 40 घुड़सवारों के बदले नारनौल तथा इसके आसपास के क्षेत्रों की जागीरदारी सौपी थी। उनकी मृत्यु के पश्चात शेरशाह सूरी के पिता हसन खान नारनौल के जागीरदार बने। अकबर (सन् 1556-1605) के काल में यह नगर अधिक फला-फूला। यहां एक टकसाल भी थी जहां से प्रसिद्ध 'जलाली' सिक्का जारी किया गया था। पानीपत की दूसरी लड़ाई के पश्चात् अकबर ने शाह कुली खान को यहां का गवर्नर नियुक्त किया जिसने नारनौल में अनेक इमारतों व बागों का निर्माण करवाया। यह नगर कुछ समय तक मराठों के भी अधिकार में रहा। मुगलों के पतन के पश्चात् नारनौल पर जयपुर के एक ठाकुर ने कब्जा कर लिया। बाद में इसकी जागीरदारी मुर्त्तजा बड़ैच के हाथ में आ गई, उनके वारिस अब्दुल रहमान को सन् 1857 में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के पश्चात् अन्य देशभक्तों के साथ फांसी दे दी गई। तत्पश्चात् नारनौल, पटियाला के शासक नरेन्द्र सिंह को ब्रिटिश सेनाओं के प्रति सेवाभाव रखने के बदले उपहार स्वरूप दे दिया गया। जागीरदारी शासन में यहां अनेक स्मारकीय भवन निर्मित हुए। इनके ऐतिहासिक एवं वास्तुशिल्पीय महत्व को देखते हुए (1) 'शाह इब्राहीम का मकबरा', (2) 'जल महल' तथा (3) 'शाहकुली खान का मकबरा' भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, द्वारा राष्ट्रीय महत्व के संरक्षित स्मारक घोषित किये गये है। नारनौल के महत्वपूर्ण स्मारकों का संक्षिप्त विवरण निम्न है :

शाह इब्राहीम का मकबरा : इस सुन्दर मकबरे का निर्माण शेरशाह सूरी (सन् 1538-1546) ने अपने दादा शाह इब्राहीम खान की कब्र पर प्रसिद्ध वास्तुशिल्पी शेख अहमद नियाजी के निरीक्षण में करवाया था। इब्राहीम खान की मृत्यु नारनौल मे हिजरी 727 (ई. सन् 1518) में हुई थी। यह महत्वपूर्ण स्मारक अपनी विशालता, बड़े मेहराबों, चित्रित छत, प्रस्तर जाली, छतरी, प्रस्तर गुलदस्ते एवं चमकीली पच्चीकारी

शाह इब्राहीम का मकबरा

के लिए प्रसिद्ध है। इसमें लगे लाल व नीली आभा वाले धूसर पत्थर इसके सौन्दर्य को और भी बढ़ा देते है। यह मकबरा वर्गाकार ऊँचे चबूतरे पर बना है जिसका प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में और पश्चिमी मेहराब सुन्दर अलंकृत प्रस्तरों से सज्जित है। मेहराबदार आले प्रस्तर जाली से बंद किये गये हैं। प्रवेश में सुन्दर नक्काशी की गई है जिसमें सुन्दर रंग संजोये गये हैं। वाह्य भाग दो मंजिलों में विभक्त है जिसे हल्के उभार वाले भूरे बलुआ प्रस्तर से सज्जित किया गया है। अलंकरण अभिप्रायों में

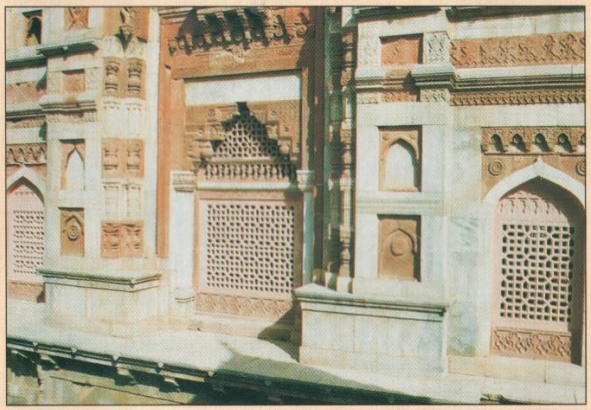

नक्काशी और पत्थर पर कटी जालियाँ, मकबरा शाह कुली खान

मुख्य फूल तथा कमल की पत्तियों का अलंकरण है। अष्टभुजी चबूतरे पर निर्मित मकबरे का गुम्बद विशाल एवं ऊपर से थोड़ा चपटा आकार लिये है। हर किनारे पर तोड़े व गुलदस्ते हैं जबकि छत के चारों कोनों पर छत्तरियां बनी हैं।

जल महल : विशाल तालाब के मध्य स्थित इस भवन का निर्माण नारनौल के जागीरदार शाह कुली खान (ई. 1590-91) ने करवाया था। इस महल का मुख्य द्वार दक्षिण दिशा में है जहां सुरक्षाकर्मियों के लिए भवन बने हैं तथा इसके मध्य से होकर महल तक पहुंचने के लिए सोलह मेहराबों से युक्त एक पुल बना है जिसके चारों ओर चार द्विमंजिले कमरे बने हैं जो कि बरामदे से जुड़े हैं। ऊपर तक जाने हेतु उत्तर व दक्षिण में क्रमशः दा-दो सीढ़ियाँ बनी हैं। अंदरूनी भाग में चूना पलस्तर हुआ है जिनमें हल्के लाल, नीला तथा पीले रंग का प्रयोग किया गया है। अर्धगुम्बदाकार चार छतरियां जो चारों कोनों के कमरे से सलंग्न हैं, चिकने चूने के पलस्तर के ऊपर फूल-पत्तियों तथा ज्यामितीय अभिप्रायों से सज्जित हैं। इन अभिप्रायों के मध्य काले रंग से अलंकृत फारसी आयतों का समावेश किया गया है। मध्य के कमरे की छत

जल महल

अठपहलू आधार पर अर्द्ध-गोलाकार गुम्बद वाली छतरी से आच्छादित है। छत के चारो कोनों पर चार छोटी छतरियां संरचना को संतुलित करती है।

शाह कुली खान का मकबरा : इस मकबरे को शाह कुली खान ने स्वयं सन् 1578 में बनवाया था। इसके बाह्य एवं अंदरूनी दोनों भाग अष्ठभुजी योजना में ऊँचे चबूतरे पर निर्मित है। इसमें नीलाभ-धूसर प्रस्तर एवं लाल बलुआ प्रस्तर का मिश्रित प्रयोग किया गया है। तोड़ो पर आधारित संकरे बरामदे में अल्प अन्तराल से मेहराबदार प्रवेश बने है। मकबरे के आठों भाग समान योजना में निर्मित है। दक्षिणी प्रवेश को छोड़कर सातों ओर मेहराबदार आयताकार संरचना में लाल बलुआ पत्थर की नक्काशीदार जाली बनी है। मेहराबदार प्रवेश व तीन दिशाओं मे बने कोने साधारण है जबकि शेष चार दोहरे अर्द्ध-गुम्बदीय मार्ग को दर्शाते हैं। मेहराबों से घिरी लघु आयताकार संरचनाओं में हलके उभारों में ज्यामितीय अलंकरण उकेरे गए हैं। मकबरे का अन्दरूनी हिस्सा संगमरमर से ढका है जिसके अन्दर छह कब्रें बनी हैं। मध्य की कब्र के साथ संगमरमर पर निर्मित वर्गाकार आधार वाला अष्ठकोणीय स्तम्भ है जो कि अष्ठभुजी आधार वाले चबूतरे पर आच्छादित है। यह छोटा किन्तु सौन्दर्य की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यह मकबरा पठानों द्वारा निर्मित मकबरों की सुन्दर शैली को दर्शाता है।

शाह कुली खान का मकबरा

त्रिपोलिया दरवाजा : इस त्रिमुखी भव्य दरवाजे को शाह कुली खान ने सन् 1589 में आराम-ए-कौसर बाग के प्रवेश द्वार के रूप में बनवाया था। यह तीन मंजिली संरचना ईंट पत्थर के टुकड़े व गारे से बनी है। इस पर अंकित अभिलेख में इमारत के निर्माता का नाम तथा निर्माण की तिथि अंकित है।

त्रिपोलिया दरवाजा

शाह विलायत का मकबरा : यह मकबरा इब्राहीम शाह के मकबरे के निकट निर्मित है। इस परिसर में मदरसा भी संलग्न है। अनेकों बार बदलाव के कारण वास्तविक संरचना में परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं। मकबरे का ऊपरी भाग पठान शैली के कलश युक्त अर्द्धवृत्ताकार गुम्बद से आच्छादित है। गुम्बद का आन्तरिक भाग वर्गाकार है जिसमें बाद में चित्रकारी भी की गई। इसकी दोनो बाहरी दीवारें मुगलकाल के अन्तिम दिनों में बनी। फारसी में लिखे अभिलेख में तुर्की सन्त की मृत्यु तिथि हिजरी 531 (सन् 1122) अंकित है।

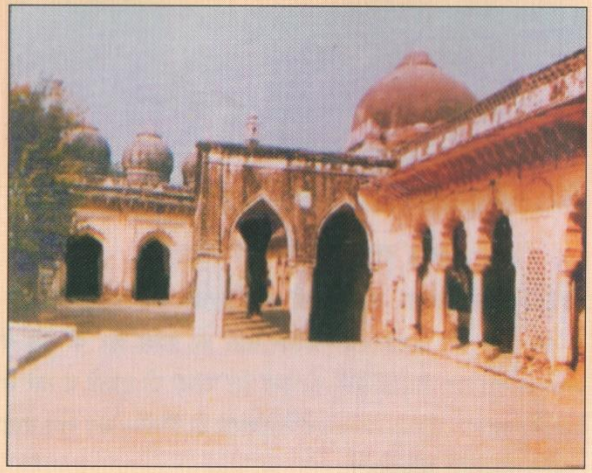

शाह विलायत का मकबरा

चोर गुंबद : एक अफगान नवाब जमाल खान ने इसे बनवाया था। एक कमरे वाले वर्गाकार स्मारक के चारों कोनों पर चार मीनारें जुड़ी हैं। इसके विस्तृत एवं ऊपर से दबे हुए गुम्बद, मेहराब शैली एवं अन्य वास्तुगत विशेषतायें इसे तुगलक काल से संम्बधित करती हैं। वर्तमान में इसमें कोई कब्र मौजूद नहीं है। लम्बे समय से उपेक्षित यह जगह चोर लुटेरों की शरणस्थली हो गया होगा, जिसके फलस्वरूप कालान्तर में इसका नाम चोर गुम्बद पड़ गया।

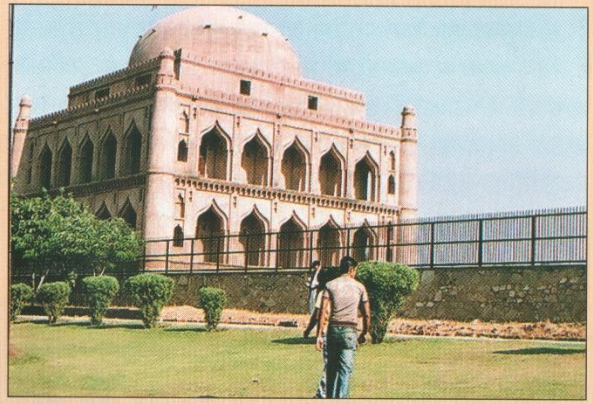

चोर गुंबद

छत्ता रायमुकन्ददास (बीरबल का छत्ता) : इस ऐतिहासिक स्मारक का निर्माण शाहजहां (सन् 1628-58 ई0) के शासन काल में नारनौल के दीवान रायमुकुन्ददास ने करवाया था। इस पांच मंजिली इमारत में अनेकों कमरे बरामदे तथा मण्डप हैं। दरबार हाल के मध्य में स्तम्भों पर आधारित कमरे एवं संलग्न विशाल आंगन हैं। इस संरचना की योजना व आन्तरिक साज-सज्जा विशाल एवं भव्य है। प्राकृतिक रोशनी का सुन्दर

छत्ता रायमुकन्ददास (बीरबल का छत्ता)

समायोजन इसकी विशेषता है। सजावट व बाहरी आवरण, स्तम्भों व तोड़ों में संगमरमर का प्रयोग तथा छोटे-छोटे सजावटी झरने व छोटी नहरें झुलसा देने वाली गर्मी में शान्ति व ठण्डक पहुँचाते रहे होंगें। दक्षिण-पूर्वी कोने में बने कुएं से रहट की सहायता से पानी विभिन्न स्तरों तक पहुँचाया जाता होगा। महल के पश्चिमी ओर कुछ मीटर की दूरी पर मुख्य द्वार है। यह उत्तम संरचना आर्कषक है जिसमें विभिन्न रंगों का प्रयोग व बाहर की ओर निकले झरोखे सुन्दरता को बढ़ा देते हैं। इसमें तीन भूमिगत स्तर व सुरंगे हैं जो कि एक दूसरे से निश्चित उँचाई पर हैं। ये तीनों सुरंगें क्रमश: दिल्ली जयपुर और महेन्द्रगढ़ जाती हैं। वर्तमान में एक ही भूमिगत स्तर सुरक्षित बचा है।

तख्त वाली बावड़ी : नारनौल शहर के उत्तर पश्चिम स्थित इस बावड़ी का निर्माण मिर्जा अली खान ने करवाया था। दक्षिणी ओर बनी विशाल संरचना मेहराबदार हैं जो तीन मंजिली बावड़ी व कुऐं से जुड़ी है। इसमें आयताकार स्तम्भों पर आधारित छतरी वाला संगमरमर तख्त लगा है। छतरी धूसर प्रस्तर निर्मित स्तम्भों पर टिकी है जो सभी ओर खुले हैं तथा इसके नीचे सीढ़ी से जुड़ा झरोखा है। तख्त का सबसे निचला हिस्सा दक्षिणी ओर से कुएं से जुड़ा है। बावड़ी में फव्वारा तथा नालियों द्वारा पानी पहुंचाने की प्राचीन व्यवस्था देखने योग्य है। बावड़ी जीर्णावस्था में है।

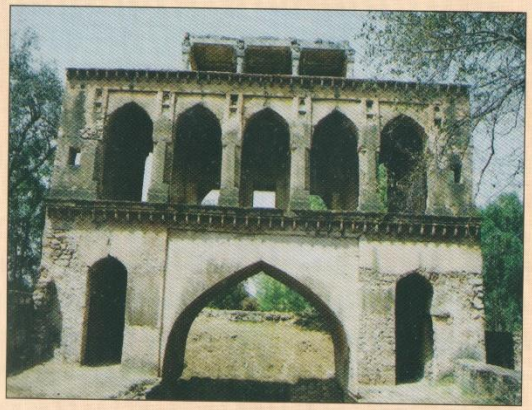

तख्त बावड़ी